पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति का धार्मिक जीवन

(Religious Life Of Hill Korwa's Primitive Tribe)

प्रस्तावना –

मानव अपने दैनिक जीवन में विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति करना चाहता है | जिसके लिए वह अनेकानेक प्रयत्न करता है किन्तु सभी प्रकार की इच्छाओं और उद्देश्यों की पूर्ति के लिए केवल मानवीय प्रयत्न ही पर्याप्त नहीं होते बल्कि कुछ ऐसी शक्तियों की भी सहायता लेनी पड़ती है जो उसकी शक्ति से श्रेष्ठ एवं परे है , साथ ही समाज एवं प्रकृति से परे एवं पारलौकिक है। मानव ने विभिन्न क्रियाओं के द्वारा इन अतिमानवीय शक्तियों को नियंत्रण करने व उन पर विजय प्राप्त करने का प्रयत्न किया और वह जब अपनी असमर्थता स्वीकार कर उन पर नियंत्रण करने के बजाय उनसे नियंत्रित होने लगता है या समर्पण कर नतमस्तक हो जाता है , तो धर्म का उदय होता है।

धर्म , मनुष्य के जीवन का एक अनिवार्य तत्व है। धर्म की विशेषताओं , उसके आदर्शों और जीवन को संगठित करने से सबन्धित उसके कार्यों को देखते हुये यह स्वीकार कर लेना पड़ता है कि धर्म एक ऐसा अमूर्त तत्व है जो मनुष्य कि बुनियादी आवश्यकताओं से भी बढ़कर महत्वपूर्ण है। डेविस के शब्दो में, "मानव समाज में धर्म इतना सार्वभौमिक, स्थायी एवं व्यापक है कि धर्म को स्पष्ट रूप से समझे बिना हम समाज को नहीं समझ सकते।" मनुष्य की भिन्न-भिन्न संस्थाओं में धर्म सर्वोत्तम तथा सर्वकालीन है। इतिहास के पन्नों को उलटकर देखने से पता लगता है कि हर समय तथा हर स्थान पर मनुष्य ने किसी-न-किसी ढंग तथा रूप से धर्म में

विश्वास रखता है। इस प्रकार धर्म का इतिहास वास्तव में मानवीय समाज का इतिहास है। धार्मिक जीवन को जानने से पहले ये जानना आवश्यक है कि धर्म क्या है। धर्म प्रत्येक समाज में पाया जाता है। धर्म अलौकिक शक्ति में विश्वास एवं इनकी उपासना पर आधारित होता है। धर्म का संबंध हमारी मानसिक प्रवृति से होता है जिसका प्रादुर्भाव हमारे विचारों और संस्कारों द्वारा होता है। 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ धर्म करना है अर्थात जिसके द्वारा ब्रह्मांड धारण किया जाता है। बोकेट[1] **(Bouquet)1954,** के अनुसार धर्म (**Religion**) एक लैटिन (**Latin**) शब्द ***Rel*** + ***igio*** से निकला है **,** जिसका अर्थ है- इकट्ठा करना **,** गिनना**,** व निरीक्षण करना या बांधना। इस प्रकार इस शब्द का अर्थ हुआ- किसी पारलौकिक शक्ति में विश्वास रखना और उसका निरीक्षण करना। दूसरा अर्थ यह भी होता है कि उन आवश्यक कार्यों की पूर्ति करना**,** जो मनुष्य तथा किसी अलौकिक शक्ति को परस्पर बांधते हैं। मनुष्यों में धर्म आदेश की भावना प्रदान करती है।

धर्म, मानवविज्ञानियों के लिए एक आदर्श विषय का प्रतिनिधित्व करता है। मनुष्य के मन में यह प्रश्न स्वाभाविक रूप से उठा कि आखिर इस धर्म जैसी जटिल संस्था का जन्म कैसे हुआ ? वे कौन सी परिस्थितियाँ, दशाए एवं कारक थे ? जिन्होंने धर्म जैसी संस्था को जन्म देने में सहायता प्रदान की। अनेक मानवशास्त्रियों ने धर्म की उत्पत्ति को ज्ञात करने के लिए आदिम

[1] Bouqet, A.C.(1884). Comparative Religion. Harmondsworth: Penguin book.

.

समाजों का अध्ययन किया। आदिम समाज छोटे एवं सरल प्रकृति के होते है। अतः वे संस्कृति के प्रारम्भिक रूप एवं उद्गम को समझने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

धर्म की विशेषताएँ-

धर्म के प्रमुख तत्व-

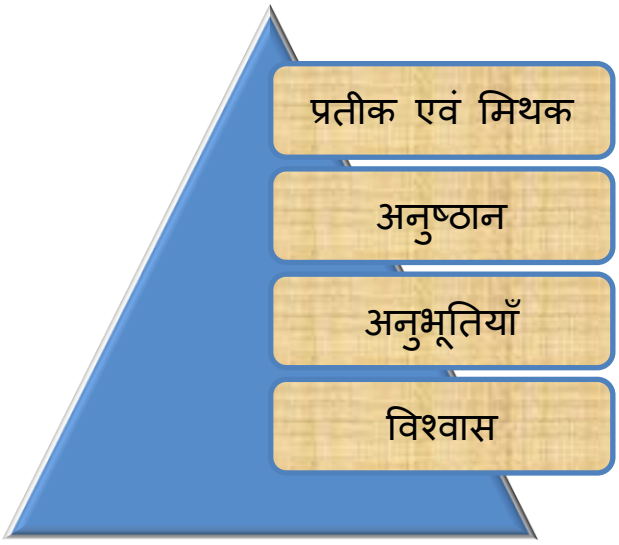

अनेक मानवशास्त्रियों ने सोचा की आदिम समाजों से ही जटिल समाजों की उत्पत्ति हुई है। अतः आदिम समाजों में ही धर्म की उत्पत्ति का पता लगाने का प्रयत्न किया जाए। आदिम जातियों में धर्म की खोज के दौरान कई प्रकार विश्वास एवं कर्मकांडों का ज्ञान हुआ जिन्होने विभिन्न सिद्धांतों को जन्म दिया। धर्म के मानव विज्ञान के अध्ययन में एडवर्ड बी टायलर , मैक्स मुलर , डब्ल्यू राबर्ट्सन स्मिथ , सर जेम्स फ्रेज़र जी के मौलिक कार्य उन्नीसवी सदी के अंत में शुरुआत की थी।

धर्म को परिभाषित करें तो अलग-अलग मानवशास्त्रियों ने अलग-अलग प्रकार से धर्म को परिभाषित किया है। टायलर [2] (Tylor) का कथन है कि "धर्म आध्यात्मिक शक्ति पर विश्वास है।" टायलर ने अपनी परिभाषा में धर्म को प्रत्यक्ष रूप से आध्यात्मिक विश्वास के साथ संबंधित किया है। जब मनुष्य अपनी शक्ति और विवेक से किसी घटना के कारण को समझने में असमर्थ हो जाता है तो वह भय और श्रद्धा के फलस्वरूप किसी-न-किसी अलौकिक शक्ति पर विश्वास करने लगता है। यही धर्म है। मैलीनोवस्की [3] (Malinowski) का विचार है कि " धर्म क्रिया की एक विधि है और साथ ही विश्वासों की एक व्यवस्था भी। धर्म एक समाजशास्त्रीय तथ्य होने के साथ ही एक व्यक्तिगत अनुभव भी है ।"

[2] Tylor, E.B.(1871). primitive culture. Londen: John Murry Albemarle street.

[3] Malinowski, B. (1948). Magic Science and Religion. California university: Greenwood Press.

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि धर्म अलौकिक शक्ति से संबंधित विश्वासों की वह व्यवस्था है, जो मानव अनुभव से प्रभावित होते हुये भी मानवीय शक्ति से परे है तथा किसी रहस्यमय शक्ति का बोध कराती है। अलौकिक शक्ति में विश्वास तथा अनुष्ठान धर्म के दो महत्वपूर्ण संगठन हैं।

धार्मिक जीवन –

मनुष्य अपने दैनिक जीवन में धर्म का उपयोग एक उपकरण के रूप में करता है। वह जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न प्रकार के धार्मिक विश्वास और क्रियाएँ करता है जिससे उसे शारीरिक और मानसिक रूप से संतुष्टि मिलती है। वह अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए रोजमर्रा के जीवन में अपने देवी-देवताओं की पुजा-पाठ, संस्कार, पवित्र स्थान, पशु-पक्षी, पेड़-पौधे इत्यादि पर विश्वास कर उनके लिए किया करते हैं। मनुष्य जैसे ही जन्म लेता है वैसे ही वह किसी धार्मिक सम्प्रदाय से जुड़ जाता है और अपने सम्प्रदाय से जुड़ी हुई रीति-रीवाज , परंपरा, देवी-देवता, त्यौहार-पर्व, को मानने लगते हैं। मनुष्य के मृत्यु होने के बाद भी उसका अंतिम संस्कार उसके धार्मिक परम्पराओं के आधार पर किया जाता है। प्रायः हर समाज में धार्मिक जीवन से जुड़े हुये कुछ क्रियाए होती है। जिसे चित्र के माध्यम से समझने का प्रयास की गई है।

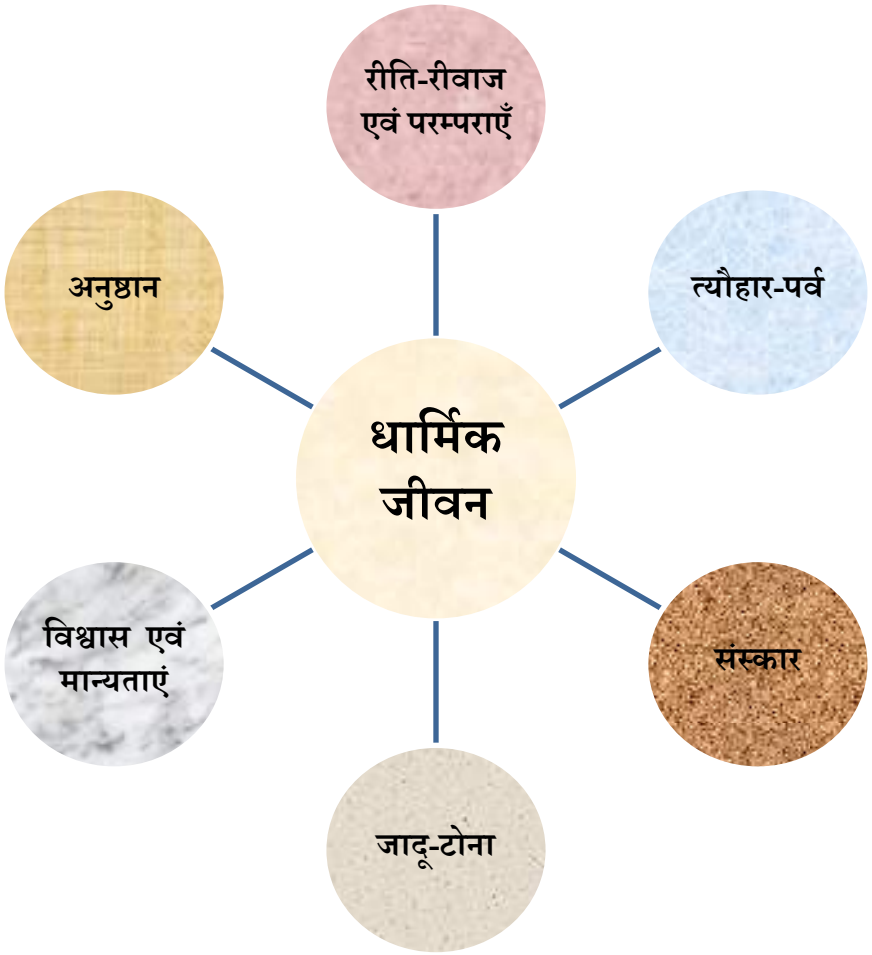

ये धर्म के सभी पक्ष संसार के पूरे समाज में देखने को मिलता है।

जनजातियों में धार्मिक जीवन –

जनजातीय जीवन में धर्म का बहुत ही महत्व है। अतः प्रत्येक जनजातीय परिवार एक विशेष धर्म में विश्वास करता है। धर्म का जनजातीय सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। जनजातियों में सामाजिक जीवन काफी सीमा तक धार्मिक विश्वासों एवं व्यवहरों तथा सांस्कृतिक परम्पराओं द्वारा निर्धारित एवं नियमित होता है। यही विश्वास एवं परंपराएं

जनजातियों में सामाजिक नियंत्रण के सशक्त माध्यम भी है। धर्म ; अनेक प्रकर के व्यवहार संबंधी नियमों को लागू करने के लिए संस्कारों , समारोह, अनुष्ठानों, पुजारियों की सत्ता तथा अन्य विशेष प्रतिकों जैसे संस्थागत साधनों का प्रयोग करता है। धर्म आदिवासियों की भावनाओं से संबंधित होता है। जो व्यक्ति जितने अधिक भावुक होता है वह उतना ही अधिक धार्मिक होता है। जनजातीय जीवन में धर्म का संबंध उनके जन्म से लेकर मृत्यु तक सम्मलित होता है। बच्चे के जन्म से लेकर मृत्यु तक विभिन्न प्रकार के अनुष्ठान, रीति-रीवाज, धार्मिक क्रियाएँ किया जाता है। जनजातीय समाज में आर्थिक, सामाजिक, व राजनैतिक रूप से धर्म का प्रभाव विशेष रूप से इनमे देखने को मिलता है। शिकार करने, कृषि कार्य, समाज में अनुष्ठानिक भोज इत्यादि में भी धार्मिक विश्वास और क्रियाएँ करते हैं। जनजातीय समाज में विभिन्न प्रकार के त्यौहार, देवी-देवता होती है। अनुष्ठान के माध्यम से विभिन्न प्रकार के बीमारियों के उपचार भी किया करते हैं।

I. **विषय का चुनाव –**

किसी प्रकार के समस्याओं का अध्ययन करने से पहले उस विषय का चुनाव करना अतिआवश्यक होता है। जब मैं एम. एस. सी. द्वितीय सेमेस्टर में था तब मैंने कमार आदिम जनजाति पर उनके धार्मिक विश्वास और क्रियाकलापों पर अध्ययन किया। अध्ययन के दौरान उनके जीवन से संबंधित उनमें पाये जाने वालें विशेष प्रकार के धार्मिक विश्वास और क्रियाकलापों , संस्कार , देवी-देवताओं का अवलोकन कर निष्कर्ष निकाला कि इनकी दैनिक जीवन में धर्म का एक विशेष

महत्वपूर्ण स्थान है। कमार जनजाति के लोग हर छोटी-सी-छोटी क्रिया के लिए भी धर्म का सहारा लेतें हैं। पहाड़ी कोरवा एक विशेष पिछड़ी आदिम जनजाति है। उनके जीवन में धर्म का क्या महत्व है तथा उनमें भी उनके जीवन से संबंधित कोई विशेष प्रकार की धार्मिक विश्वास , क्रियाकलाप , रीति-रीवाज़ , देवी-देवता , और मान्यता पाये जाते हैं। जिसे जानने के लिए मेरे मन में जिज्ञासा पैदा हुई इसलिए मैंने "पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति का धार्मिक जीवन" शोध विषय का चुनाव किया है।

II. अध्ययन का महत्व-

अनुसंधान चाहे जिस क्षेत्र में भी किया जाए उसका एक निश्चित उद्देश्य एवं महत्व होता हैं। उस उद्देश्य एवं महत्व के आधार पर अनुसंधान का औचित्य का निर्धारण होता हैं। शोधार्थी के साहित्य व लेख के अध्ययन के आधार पर यह ज्ञात हुआ है कि कोरबा जिले के विशेष संदर्भ में अभी तक पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति के धार्मिक जीवन पर कोई विस्तृत अध्ययन नहीं हुआ है। मैं अपने शोध में कोरबा जिले के पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति के धार्मिक जीवन से संबंधित रीति-रीवाज, देवी-देवता, त्यौहार, अनुष्ठान, संस्कार, मान्यताएँ, विवाह, पुजा-पाठ इत्यादि के प्रति उनमें पाये जाने वालें उनके विश्वास तथा विभिन्न क्रियाकलापों का विस्तारपूर्वक अध्ययन करने का प्रयास किया जाएगा।

शोध प्रश्न :- साहित्यपुनरावलोकन के उपरांत यह पाया गया की पहाड़ी कोरवा के धार्मिक जीवन में वर्तमान समय मेन किस प्रकार परिवर्तन हो रहा है। उस पर मानवशास्त्रियों के के द्वारा नहीं के बराबर कार्य किए गए है। इसे के आधार पर मैंने अग्रलिखित शोध-प्रश्न बनाया है जो निम्न है।

शोध प्रश्न – क्या पहाड़ी कोरवा के धार्मिक जीवन में परिवर्तन हुआ है?

III. अध्ययन के उद्देश्य –

1. पहाड़ी कोरवा जनजाति में पाये जाने वालें अनुष्ठान, संस्कार, त्यौहार का उनके जीवन में क्या महत्व है विस्तृत वर्णन कर प्रलेखन करना।
2. पहाड़ी कोरवा जनजाति में धार्मिक विश्वास और मान्यताओं का प्रलेखन करना।
3. पहाड़ी कोरवा जनजाति का नृजातिगत वर्णन करना।

IV. प्राकल्पना-

1. (a^0) पहाड़ी कोरवा जनजाति के धार्मिक जीवन में विश्वास और क्रियाओं को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

(a^1) पहाड़ी कोरवा जनजाति के धार्मिक जीवन में विश्वास और क्रियाओं को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता है।

2. (a^0) पहाड़ी कोरवा जनजाति के युवा वर्ग में धार्मिक जीवन से संबंधित धार्मिक विश्वासों और कियाओं के प्रति रुझान बढ़ा है।

(a^1) पहाड़ी कोरवा जनजाति के युवा वर्ग में धार्मिक विश्वासों और क्रियाओं के प्रति रुझान कम हुआ है।

V. शोध की सीमा एवं परिसीमाएं –

हर शोध की एक सीमा होती है उसी के तहत शोध का कार्य सम्पन्न किया जाता है। शोध में समय की बहुलता में कमी के कारण मेरे द्वारा किया गया शोधकार्य पहाड़ी कोरवा के धार्मिक जीवन शोध विषय पर है जिसकी अपनी सीमा एवं परिसीमा है जो निम्न है-

- समय की कमी के कारण पहाड़ी कोरवा द्वारा मनाए जाने वालें प्रमुख त्यौहारों के बारे में अधिक जानकारी नहीं मिल पायी जिसेसे हम उनके जीवन के बारे में विस्तृत रूप से जानने में असमर्थ रहे। लेकिन हरेली के त्यौहार के समय ही मेरा शोध कार्य प्रगति पर था जिसकी जानकारी सही रूप में प्राप्त हुई क्योंकि उस दौरान मैं कोरवा , बैगाओं के साथ जसस उनके सामाजिक व्यवहारों का अवलोकन किया।
- करीब 25-30 युवक ऐसे थे जो कोरवा जिले में चल रहे ड्राइविंग की ट्रेनिग के लिए गए हुये थे। अगर उनकी उपस्थिती होती तो मेरे प्रतिदर्श का आकार और बढ़ जाता।
- अध्ययन क्षेत्र जंगलो से काफी घिरा हुआ है जिसके कारण वहाँ रात 8 बजे के बाद उनका अवलोकन करना असंभव था। इस कारण से पहाड़ी कोरवा के लोग रात्रि कैसे व्यतीत करते हैं इसकी जानकारी लेने में असमर्थ रहें।

- दो-तीन गाँव, सड़क से 10 किलो मीटर अंदर जंगल में उनका निवास स्थान होने के कारण वहाँ सिर्फ दो- तीन बार ही जाना हुआ क्योंकि वहाँ का आवागमन पैदल चलने के बाद ही पहुचना सुनिश्चित हो पाता है अन्यथा दूसरा कोई विकल्प नहीं था।

अध्ययन के उदेश्य को ध्यान रखते हुये शोध का निम्न अध्यायीकरण किया गया है।

अध्याय 1 प्रस्तावना

1.1 विषय का चुनाव
1.2 अध्ययन का महत्व
1.3 अध्ययन का उद्देश्य
1.4 प्राकल्पना
1.5 शोध की सीमा एवं परिसीमा

अध्याय 2 क्षेत्र एवं जनजातीय परिचय

अध्याय 3 साहित्य पुरवालोकन

अध्याय 4 शोध प्रविधि

अध्याय 5. पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति का नृजातिवर्णन

अध्याय 6. पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति की धार्मिक जीवन

अध्याय 7. पहाड़ी कोरवा आदिम जनजाति के युवकों में धार्मिक विश्वास और क्रिया के प्रति रुझानों का विश्लेषण

अध्याय 8. निष्कर्ष

परिशिष्ट

अनुसूची

संदर्भ ग्रंथ

➢ शोध प्रविधि –

अनुसंधान हेतु इकाइयों का सही-सही प्रतिचयन अत्यंत कठिन कार्य होता है। समग्र आकार अध्ययन इकाइयों की प्रकृति एवं अनुसंधानों के परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखकर समस्त वैज्ञानिक तरीकों से अध्ययन इकाइयों का प्रतिचयन किया जाना अधिक उपादेय माना जाता है। इसके लिए निदर्शन प्रणाली अति उपयुक्त होती है जिसके द्वारा केवल समग्र के एक अंश का निरीक्षण करके सम्पूर्ण समग्र के बारे में जाना जा सकता है। इस शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों स्रोतों का उपयोग किया गया। गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों प्रविधियों के अपने -अपने गुण दोष होतें हैं इसलिए इस शोध में त्रीभुजिकरण का सहारा लिया गया हैं। त्रीभूजीकरण का प्रयोग इसलिए किया जाता है क्योकि शोधक्षेत्र में विभिन्न पद्धतियों का सम्मिश्रण करके शोधकर्ता द्वारा आकड़ों का संकलन किया जाता है जैसे व्यक्तिगत साक्षत्कार के साथ-साथ समूह साक्षत्कार, साक्षात्कार अनुसूची के साथ अवलोकन तथा वैयक्तिक अध्ययन का प्रयोग किया जाता है जिससे आँकड़े सरलता से इकट्ठा किया जा सके। इसलिए इस विधि का प्रयोग किया गया।

प्राथमिक स्रोत- प्राथमिक शोध में गुणात्मक एवं गणनात्मक दोनों प्रविधियों का उपयोग कर त्रीभुजीकरण किया गया। प्राथमिक स्रोत का उपयोग इसलिए किया गया है क्योकि शोधक्षेत्र में शोधार्थी द्वारा साक्षत्कार अनुसूची , अवलोकन के माध्यम से आँकड़ों को एकत्रित किया गया है। इस शोध में प्राथमिक स्रोत मेरे द्वारा पहाड़ी कोरवा जनजातिय के 100 उत्तरदाता से आँकड़े संकलित किए गए हैं।

गणनात्मक प्रविधि - इस पद्धति में संख्याओं कों महत्त्व दिया जाता है। पहाड़ी कोरवा के लोगों में उनके धार्मिक विश्वास और क्रिया के प्रति रुझान जानने हेतु तथा उत्तरदाता के परिवारों की सामान्य जानकारी प्राप्त करेने के लिए गणनात्मक प्रविधि के अंतर्गत निम्न तकनीकी का उपयोग किया गया है।

1. अनुसूची- अनुसूची का उपयोग इसलिए किया गया है क्योकि अध्ययन क्षेत्र में शोधकर्ता जब अनुसूची साक्षत्कार करने जाता है तो वहां शिक्षित और अशिक्षित दोनों प्रकार के उत्तरदाता पाये जाते हैं। इसलिए पहले से ही अनुसूची का निर्माण कर लिया जाता है जिससे तथ्य इकठ्ठा करने में आसानी होती है। इन्ही सब कारणों से अनुसूची का प्रयोग किया गया।

2. साक्षात्कार- इस शोध में कोरवा पहाड़ी से आकड़ें संकलन हेतु संरचित साक्षात्कार का प्रयोग तथा पहाड़ी कोरवा जनजातिय के नृजाति वृतांत को जानने के लिए असंरचनात्मक साक्षात्कार और समूह साक्षात्कार के साथ-साथ व्यक्तिगत साक्षत्कार का भी उपयोग किया गया जिससे आँकड़े संकलित किया जा सके।

गुणात्मक शोध- गुणात्मक प्रविधि में गुणों को महत्व दिया जाता है संख्याओं को नहीं। इसमें अध्ययन इकाइयों का वर्णन किया जाता है , इसके अंतर्गत उनके धार्मिक जीवन से जुड़ी हुई बातों को जानने के लिए और साथ ही नृजातिवर्णन के बारे में विवरण प्रस्तुत किया गया है। तथ्यों का संकलन करने के लिए निम्न तकनीकों का उपयोग किया जाएगा। इसके निम्न बिंदु है।

1. वैयक्तिक अध्ययन- वैयक्तिक अध्ययन का प्रयोग गाँव के प्रमुख बैगा से जानकारी प्राप्त करने के लिए किया गया। जीवन वृतांत या वैयक्तिक अध्ययन कर उस परिवार में कैसे धार्मिक परिवर्तन हो रहा है उसकी व्याख्या करने के लिए इस पद्धति का उपयोग किया गया।

2. अवलोकन- अवलोकन सिर्फ घटनाओं को देखना मात्र नहीं है , अपितु घटनाओं में बिना कोई परिवर्तन किए परीक्षण करना है। विज्ञान अवलोकन द्वारा असंभव होता है। अवलोकन का प्रयोग इसलिए किया गया जो सूचना अनुसूचियाँ असंरचित साक्षात्कार में मिल रही जानकारी जिससे तथ्यों को परखने के लिए इसका प्रयोग किया गया।

अनियंत्रित अवलोकन का प्रयोग इसलिए किया गया क्योकि शोधक्षेत्र में किसी तथ्य का अवलोकन प्राकृतिक वातावरण में बिना किसी रोक-टोक के क्रियाकलाप संपन्न तों वास्तिविकता का सटीक ज्ञान होता है।

अर्ध-सहभागी अवलोकन का प्रयोग इसलिए किया गया क्योंकि शोधकर्ता शोधक्षेत्र में सामाजिक निषेधों के कारण सहभागी नहीं हो पाता है इस कारण इस प्रविधि का उपयोग किया गया। यह प्रविधि अधिक व्यावहारिक एवं सरल मानी जाती है जिससे शोधकर्ता को आकड़ें संकलित करने में आसानी होती है।

द्वितीयक स्रोत- द्वितीयक के अंतगर्त शोधार्थी द्वारा वे सूचनाएँ व आकड़ें , प्रकाशित व अप्रकाशित पत्र-पत्रिका, रिपोर्ट, सांख्यिकी, पाण्डुलिपि पत्र , डायरी, टेप, विडियों, कैसेट, व इंटरनेट आदि का प्रयोग किया जाएगा जिससे शोध सफल हो सके।

तथ्यों का विश्लेषण के लिए विशेषकर SPSS(Statistical Package Of Social Science) का उपयोग किया गया है।

प्रतिदर्श का आकार- प्रतिदर्श के आकार को चयनित करने के लिए सरल दैव निदर्शन पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस प्रतिदर्श इकाइयों का चयन अनेक विधियों से होता है। इस शोध में लॉटरी पद्धति

द्वारा चुनाव किया गया है। अध्ययन के लिए मैंने कुल चार ग्राम पंचायत में से 9 गाँव का चुनाव किया क्योंकि यहा पर पहाड़ी कोरवा युवको की जनसंख्या अधिक पाई गई है। तालिका में अलग-अलग गाँव में उम्र के अनुसार युवकों की संख्या और उनकी वैवाहिक स्थिति को दिखाया गया है।

क्र.	गाँव	आयु-वर्ग			कुल	वैवाहिक स्थिति		कुल
		18-25	26-30	31-35		वैवाहिक	अवैवाहिक	
		संख्या(%)	संख्या(%)	संख्या(%)	संख्या(%)	संख्या(%)	संख्या(%)	संख्या(%)
1	बाघमाड़ा	2	3	-	5	5	-	5
2	दलदली	3	2	2	7	5	2	7
3	छातासराई	4	14	3	21	19	2	21
4	टोकभाठा	3	6	1	10	9	1	10
5	परसापाली	3	4	1	8	5	3	8
6	कोरई	2	1	-	3	2	1	3
7	कदमझरिया	7	7	1	15	10	5	15
8	हरदीमहुवा	8	5	2	15	10	5	15
9	जामभाठा	9	7	-	16	15	1	16
	कुल	41	49	10	100	80	20	100

विश्लेषण – अध्ययन क्षेत्र में मैंने कुल 100 अलग-अलग आयु समूह ,18-25, 26-30, 31-35 के सुचनादाताओं का चुनाव किया। जै सा कि उपरोक्त तालिका क्रमांक 1 से स्पष्ट हो है। गाँव से अलग-अलग आयु-समूह के व्यक्तियों का चयन किया। 41 .0 प्रतिशत सुचनादाताओं की आयु 18-25 वर्ष ,

49.0 प्रतिशत लोगों की आयु 26-30 वर्ष , और 10.0 प्रतिशत सूचनादाता की आयु 31-35 वर्ष पाई गई है। जिसमें से 80.0 प्रतिशत लोग विवाहित थे और 20.0 प्रतिशत लोग अविवाहित थे।

निष्कर्ष

अध्ययनित क्षेत्र के अध्ययन के बाद निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि यह निवास करने वाली पहाड़ी कोरवा जनजाति के जीवन जीने के शैली में ज्यादा परिवर्तन देखने को नहीं मिलता है। इनके जीवन स्तर में कुछ ऐसे भी पक्ष है जिसमें पारंपरिकता देखने को मिलती है। इनका जीवन बहुत ही सामान्य है। ये अपने आप को प्राकृति से जन्मे मानते है ,क्योकि इनका मानना है कि 'कोरई' के वृक्ष ने ही इनकी जान बचाई है और इसी वृक्ष के कारण आज इनका अस्तित्व है।

8.1 पहाड़ी कोरवा जनजाति में धर्म का प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण-

जिस प्रकार **मैलीनोवस्की[4] ने धर्म के** प्रकार्यात्मक दृष्टिकोण में यह बताने का प्रयास किया की सभी मानवीय समाजो में धर्म संरचना और कार्यों के द्वारा एकता स्थापित होता है। धर्म का कार्य मानव मस्तिष्क को तनाव और दबाव से मुक्त करना है। वे कहते हैं कि धर्म एक उपकरण है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन में मानसिक और भौतिक स्थिरता प्राप्त करता है। ठीक उसी प्रकार पहाड़ी कोरवा जनजाति में भी धर्म का उपयोग एक उपकारण के रूप में किया जाता है , ये अपनी अधिकतर आवश्यकताओं की पूर्ति अपने देवी-देवताओं के माध्यम से करते है चाहे भोजन के लिए हो या किसी भी प्रकार कि कष्ट को दूर करने के लिए हर आवश्यकताओं कि पूर्ति हेतु धर्म का सहारा लिया जाता है। जब इनकी समस्याएँ दूर होती है तब इन्हे मानसिक रूप से खुशी मिलती है।

[4] Malinowski, B. (1948). Magic Science and Religion. California university: Greenwood Press.

8.2 परिकल्पना का परीक्षण-:

मेरी पहली परिकल्पना थी

2. (a^0) पहाड़ी कोरवा जनजाति के धार्मिक जीवन में विश्वास और क्रियाओं को अधिक महत्त्व दिया जाता है।

(a^1) पहाड़ी कोरवा जनजाति के धार्मिक जीवन में विश्वास और क्रियाओं को अधिक महत्त्व नहीं दिया जाता है।

इनके जीवन में धार्मिक विश्वास और क्रियाकलापों का बहुत ही ज्यादा महत्व देखने को मिलता है। प्रत्येक दिन सुबह से लेकर शाम तक इनके जीवन में कुछ ना कुछ ऐसे घटना घटित होती है जिसका संबंध धार्मिक विश्वासों और क्रियाकलापों से जुड़ा हुआ होता है। **श्रीवास्तव [5] (1958)** के अनुसार "थारु जनजाति में किसी भी प्रकार की कष्ट आने पर अपने देवी-देवता से मदद लिया जाता है और जैसी ही उसका कष्ट दूर होता है अपने देवी-देवता को प्रसन्न करने के लिए भिन्न-भिन्न प्रकार के क्रियाकलाप करता है" पहाड़ी कोरवा की धार्मिक जीवन की बात करे तो यह निष्कर्ष सामने आता है कि जब इन्हे किसी भी चीज कि आवश्यकता होती है या किसी भी प्रकार का कष्ट होता है तभी ये अपने देवी देवता के पास जाकर मदद मांगतें है क्योंकि इनका विश्वास है कि इनके देवी-देवता इनकी हर समस्या का समाधान करते है और ये उससे संबन्धित अनेक क्रियाकलाप करते है। जैसे गर्भधारण से लेकर मृत्यु तक के संस्कार में आवश्यकता के अनुरूप उनसे संबन्धित क्रियाकलाप करते है , जैसा कि यह माना जाता है की किसी दंपति का कई वर्षो तक जब बच्चा नहीं होता तब ये अपने इष्ट देवता के पास जाकर मन्नत मांगते है और जैसे ही इनकी मन्नत पूरी हो जाती है पूजा-पाठ, बलि देकर धार्मिक क्रियाकलाप किया जाता है।

[5] Srivastav, S.K. (1958). The Tharus:A study in Culture Dynamics. Agra: university press.

इसी प्रकार इनके आर्थिक जीवन में भी धार्मिक विश्वास और क्रियाकलाप स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। **शर्मा[6] (1993)** ने "छत्तीसगढ़ के कमार जनजाति के धार्मिक विश्वासों , क्रियाकलापों, का वर्णन कर यह बताने का प्रयास किया कि कमार जनजाति के लोग किसी को कार्य को शुरू करने के पूर्व अपने देवी-देवता को नमन करते है। कमार जनजाति के लोग अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि भी देता है" पहाड़ी कोरवा जनजाति में भी जब भी किसी कार्य को शुरू किया जाता है तो उसके पूर्व अपने देवी-देवता के नाम से नमन किया जाता है जैसा कि कृषि कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व , औषधि संकलन के पूर्व, बैगा-गुनिया करने से पूर्व देवी-देवता को यादकर नमन किया जाता है। साथ ही ये भी अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए बलि देते हैं। कृषि का कार्य प्रारम्भ करने के पूर्व तथा अंत में अपने देवी-देवता , उससे संबन्धित पूजा-पाठ की जाती है , इनमें यह विश्वास है की जब तक पूजा-पाठ करके कृषि का कार्य प्रारम्भ नहीं किया जाता तथा फसल के कट जाने के बाद प्रथम भोग अपने देवी-देवता को नहीं कराया जाता तो इनके देवी-देवता नाराज होकर इन्हे कष्ट पंहुचाते है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में यात्रा ,खाद्य संकलन,गर्भवती महिलाओं, विवाह, मृत्यु से भी संबन्धित धार्मिक विश्वास औए क्रियाकलाप देखने को मिलता है।

"बैगा" बनने के विधि में सर्वप्रथम चरण मुख्य देवी-देवताओं को नमन किया जाता है, झाड़-फुक करने के पूर्व ,औषधि लाने के पूर्व अपने देवी-देवता का सुमरन करते हैं इनमें यह विश्वास पाया जाता है कि जब तक देवताओं का सुमरन नहीं किया जाता उनके बैगा गुनिया करने से व्यक्ति ठीक नहीं होता इनके अंदर पाये जाने वाली सभी शक्ति उनके देवताओं की देन है इसलिए बैगा गुनिया करने के पूर्व एक बार देवता का सुमरन जरूर करते हैं। पहाड़ी कोरवा जनजाति में जब व्यक्ति बुरी शक्तियों का भी सहारा लेता है तब भी धार्मिक विश्वास और उससे संबन्धित क्रियाकलापों को करता है जैसे बैररानी एक देवी है

[6] शर्मा, विनोद कुमार. (1993). कमार जनजाति का सामाजिक मानवशास्त्रीय अध्ययन. शोध प्रबंध : पं. रविशंकर शुक्ला रायपुर (म.प्र.).

जिसे बुरी शक्तियों कि देवी माना जाता है। इस देवी के संदर्भ में यह माना जाता है कि इनसे ही इन्हे बुरी शक्तियों कि प्राप्ति होती है और उस शक्ति को प्राप्त करने के लिए ये धार्मिक क्रियाकलाप करते है। **मजूमदार[7](1961) "रेसेज एंड कल्चर्स आफ इंडिया"** में भारत की जनजातीय धर्म का उल्लेख किया उनके अनुसार मनुष्य के जीवन को भूतात्माओं की शक्ति व निराकार छाया से घिरा हुआ बताया है। आत्माओं के निवास स्थान के बारे में वर्णन किया जैसे – चट्टानों में , नदियों,जल प्रपात तथा वृक्षो में निवास करती है। पहाड़ी कोरवा जनजाति में भूत-प्रेत की अवधारणा देखने को मिलती है। पहाड़ी कोरवा में भूत-प्रेत का निवास स्थान मुख्य रूप से जंगलों को ही मानते है। **Choudhary[8](1969)** ने मिदनापुर में रहने वाली मुंडा जनजाति का अध्ययन कर जादू-टोने से संबन्धित दो प्रकरणो को प्रकाश में लाया और उसे सामान्यीकृत कर कहा की ज्यादातर मुंडा विधवा महिला जादू-टोने में लिप्त रहती हैं। परंतु पहाड़ी कोरवा जनजाति में ऐसा कुछ देखने को नहीं मिला की विधवा औरतें ही टोने जादू में लिप्त होती है। **Singh[9] (1969)** ने पवित्र तथा अपवित्र की प्रासंगिकता की खोज कर पानी की उपयोग के ढांचे के बारे में वर्णन किया साथ ही यह भी बताया की पानी द्विअर्थी है , पानी में पवित्र तथा अपवित्र दोनों का गुण समावेश पाया जाता है। पहाड़ी कोरवा में भी पवित्र और अपवित्र वस्तु से संबन्धित अवधारणा पाया जाता है परंतु पानी के द्विअर्थी होने के बारे में मैंने शोध ऐसा कुछ नहीं पाया हैं।

दुबे [10] (1993) के अनुसार धर्म के सैद्धांतिक और व्यावहारिक पक्षों होते है। सैद्धांतिक पक्ष में वह अपनी जीवन से संबंधित आवश्यकताओं को पूर्ति करने के लिए कुछ क्रिया करता है जैसे –

---

[7] Majumdar, D.N. (1961).Races and Culture of India. Bombay: Asia Publishing House.

[8] Choudhary, Buddhadeb. (1969). An Analytical Study of Witchcraft Among the Munda of Midnapur. Bulletin of Culture Research Institute.Vol.viii

[9] Sing, T.R. (1969). Water:Some aspects of Ritual Purity and pollution. Journal of Social Science. VOL. XII.No.2.

[10] दुबे, श्यामचरण. (1993). मानव और संस्कृति.नई दिल्ली: राजमहल प्रकाशन प्रा.लि..133-147

जादू ,दूसरा पक्ष जिसमे इसके द्वारा पूजारियों तथा शमन के माध्यम से अपनी आवश्यकताओं कि पूर्ति करता है। मेरे द्वारा अध्ययनित क्षेत्र में किए गए अध्ययन में पहाड़ी कोरवा में इन दोनों पक्षो को यहा अवलोकन किया गया है कि जब कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को नुकसान पहुंचाना चाहता है तो आवश्यकता के अनुरूप जादू का सहारा लेता है जो इसके सैद्धांतिक पक्ष के अंतर्गत आते है जब "बैगा" के द्वारा अपनी समस्या का समाधान करते है तब ये उनका व्यावहारिक पक्ष को दर्शाता है। पहाड़ी कोरवा बीमारी को लेकर अधिक धार्मिक होते हैं जब किसी व्यक्ति को कोई बीमारी होती है या वह बीमार होता है तो सर्वप्रथम वह बैगा के पास ही जाता है। "बैगा" पारंपरिक तरीके से हाथ छूकर पता लगाता है की उस व्यक्ति को क्या बीमारी है , बीमारी का पता चलेते ही बीमारी के उपचार से संबन्धित झाड़-फुक करते हुये धार्मिक क्रियाकलाप करता है। इस प्रकार हम यह कह सकते है कि पहाड़ी कोरवा जनजाति समुदाय के जीवन में धार्मिक विश्वास एवं क्रियाकलापों का अधिक महत्व है। हर छोटे से छोटे कार्य को पूरा करने के लिए धर्म का सहारा लेता है। जिससे वो अपनी अवश्यकताओं की पूर्ति करते है। इस प्रकार मेरी पहली परिकल्पना **सत्य** साबित होती है|

मेरी दूसरी परिकल्पना

3. (a^0). पहाड़ी कोरवा जनजाति के युवा वर्ग में धार्मिक जीवन से संबंधित धार्मिक विश्वासों और कियाओं के प्रति रुझान बढ़ा है।

(a^1) पहाड़ी कोरवा जनजाति के युवा वर्ग में धार्मिक विश्वासों और क्रियाओं के प्रति रुझान कम हुआ है।

ग्राफ .1 पूजा-पाठ का आयु वर्ग के साथ संबंध

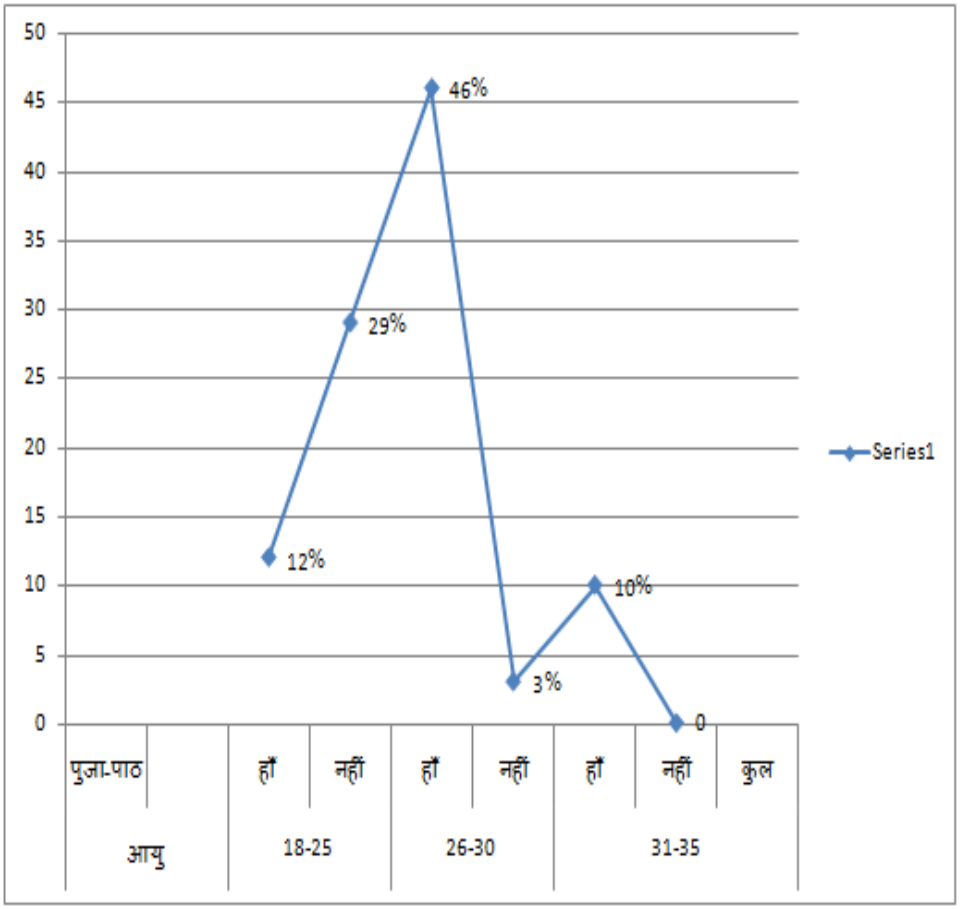

विश्लेषण -

जैसा की उपरोक्त ग्राफ से स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि 18-25 वर्ष के केवल 12.0 प्रतिशत सूचनादाता ही पूजा-पाठ करते हैं 29.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करतें ,लेकिन 26-30 वर्ष के 46.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ करते हुये पाये जबकि 3.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ में संलग्न नहीं पाये गए है, 31-35 वर्ष के 10.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ करते हुये पाये गए।

ग्राफ 2 पूजा-पाठ का शिक्षा के साथ संबंध

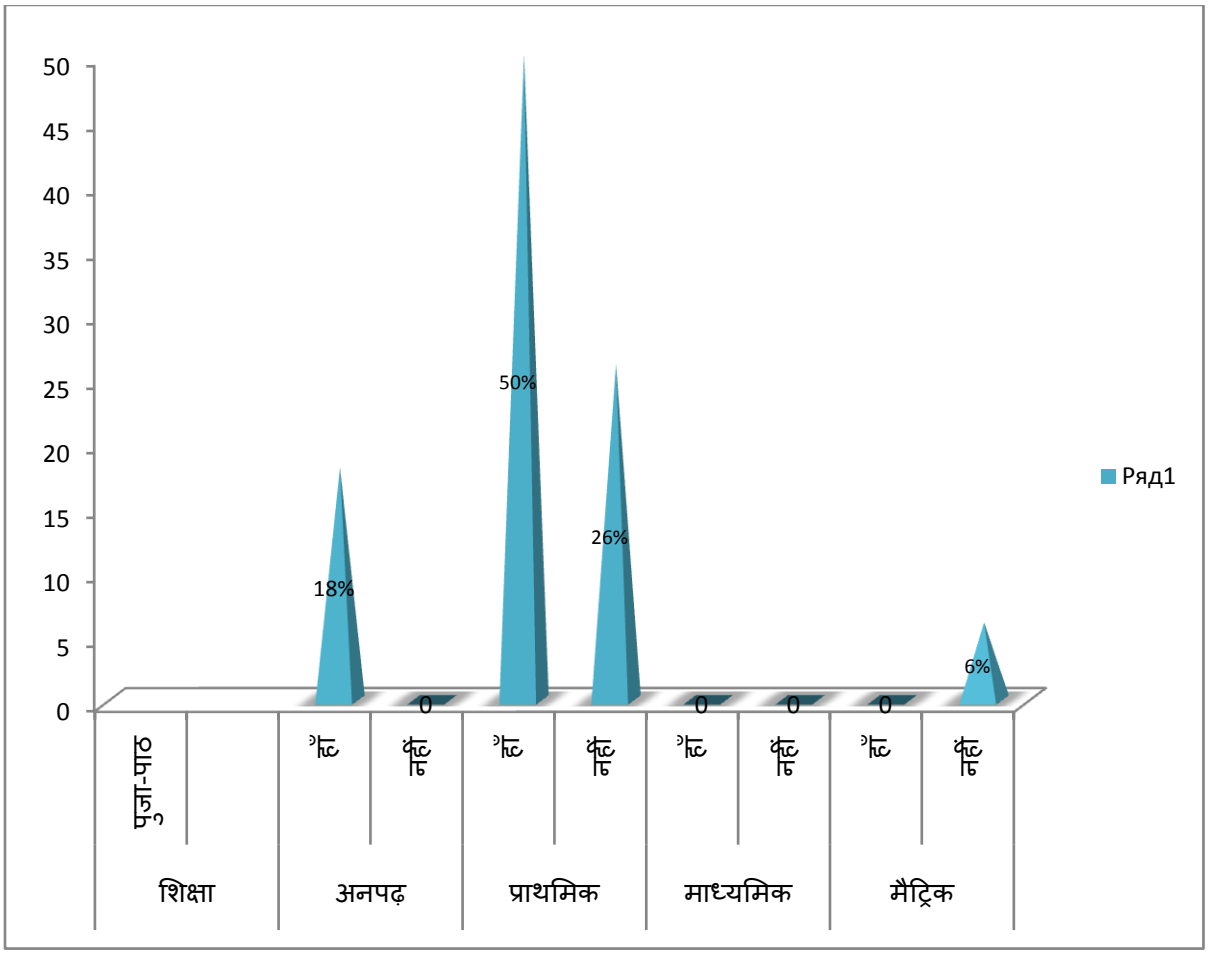

विश्लेषण –

उपरोक्त ग्राफ से ये स्पष्ट हो रहा है कि 18.0 प्रतिशत सूचनादाता है जो अनपढ़ है और पूजा-पाठ करते है, 50.0 प्रतिशत सूचनादाता प्राथमिक स्कूल तक पढ़ाई किए है जो पूजा-पाठ करतें हैं , जबकि 26.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करतें है , मैट्रिक कक्षा में पड़ने वाले 6.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करतें हैं।

ग्राफ.3 1 पूजा-पाठ का व्यवसाय के साथ संबंध

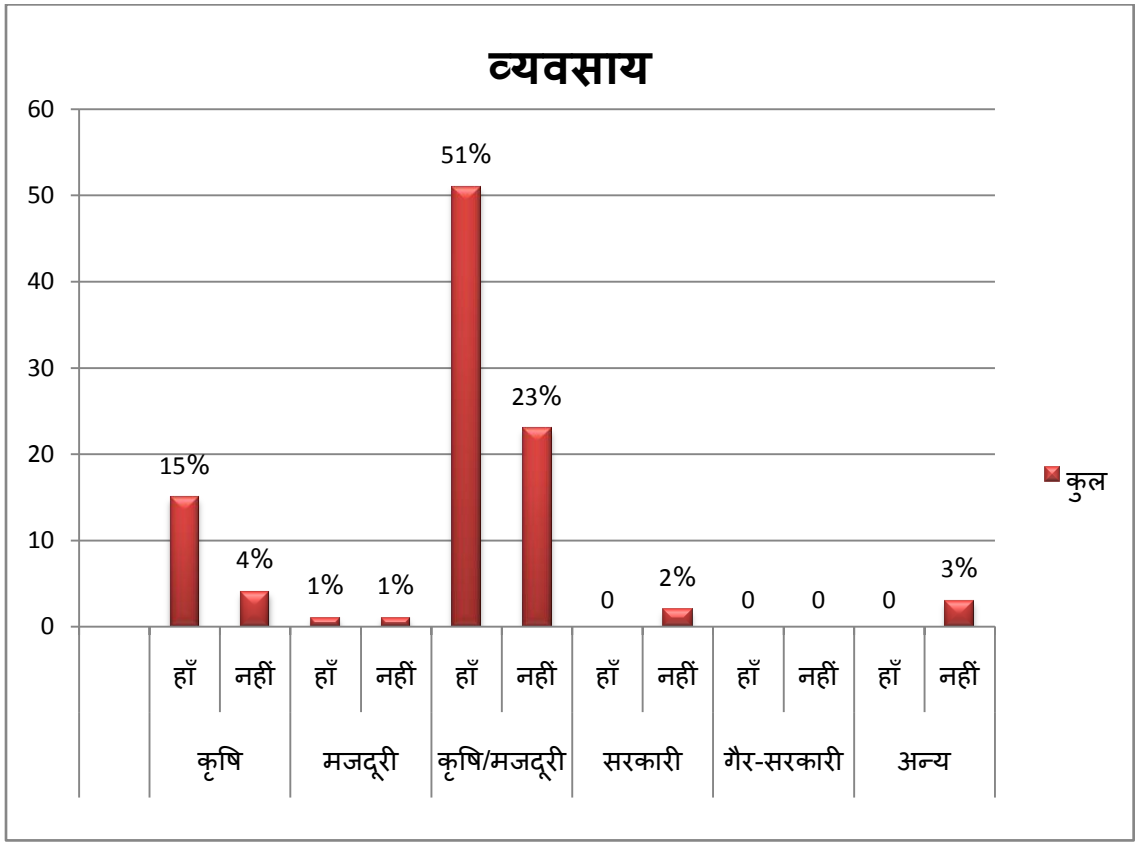

विश्लेषण –

उपरोक्त ग्राफ से स्पष्ट हो रहा है कि 15.0 प्रतिशत सूचनादाता कृषि का कार्य करते है जो पूजा-पाठ करतें पाये गए , जबकि 4.0 प्रतिशत सूचनादाता कृषि कार्य करने वाले सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करतें हैं, 51.0 प्रतिशत सूचनादाता कृषि/मजदूरी दोनों का कार्य करतें हैं और पूजा-पाठ में संलग्न पाये गए जबकि 23 .0 प्रतिशत सूचनादाता जो कृषि/मजदूरी दोनों का कार्य करतें है पूजा-पाठ नहीं करतें हैं, 2.0 प्रतिशत सूचनादाता जो सरकारी काम में संलग्न थे पूजा-पाठ नहीं करतें है,

इस प्रकार हम तीनों ग्राफ का निष्कर्ष निकले तो यह बात सामने आती है कि जो कम उम्र के युवा वर्ग हैं उनमें रुझान की कमी स्पष्ट दिखलाई पड़ता है,उनकी शैक्षणिक स्थिति का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि प्रारम्भ में जब अनपढ़ थे तब उनमें रुझान ज्यादा रही होगी लेकिन जैसे-जैसे शिक्षा का स्तर बदते गया उनमें अपने धार्मिक विश्वास और क्रियाकलाप के प्रति रुझान में कमी आते गई जैसा कि ग्राफ.2 में दिखाया गया है। व्यवसाय का अवलोकन करने पर यह बात उभर कर सामने आती है कि जैसे-जैसे पहाड़ी कोरवा में व्यवसाय का स्तर बड़ते गया युवा वर्ग मे अपने धार्मिक विश्वास और क्रियाकलाप के प्रति रुझान में कमी आने लगी। इस तरह से इन सभी बातों से साबित होता है कि पहाड़ी कोरवा युवको में अपने धार्मिक विश्वास और क्रियाकलापों के प्रति रुझान में कमी आई है या यह भी कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि उनमें रुझान पाया ही नहीं गया। 68.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ करते थे और 32.0 प्रतिशत सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करते थे। जो सूचनादाता पूजा-पाठ नहीं करते है इसका प्रमुख कारण है या तो उनकी शादी नहीं हुई है या फिर जब तक घर के बुजुर्ग होते हैं तब तक पूजा-पाठ नहीं करते हैं। इस बात को भी नहीं नकारा जा सकता कि वे भौतिक रूप से तो नहीं जुड़े होते है मगर अभौतिक रूप से उनमें अपने देवी-देवताओं के प्रति विश्वास पाया जाता है। इस प्रकार मेरी Null परिकल्पना अ**सत्य** साबित होती है अर्थात Alternative परिकल्पना **सत्य** साबित होती है|

पहाड़ी कोरवा अत्यंत सरल व शांत स्वभाव के होते हैं। इनके सामाजिक पक्ष का अवलोकन करें तो आज भी पारंपरिकता की झलक दिखालाई पड़ता है। ये आज भी अपने समाज के द्वारा बनाए गए पारंपरिक नियम के विरुद्ध कोई ऐसा काम नहीं करते जिसके कारण उन्हे किसी प्रकार का कष्ट हो| कहने का तात्पर्य यह है कि समाज द्वारा बनाए गए नियम कानूनों का बड़े ही दृढ़ता से पालन किया जाता है लेकिन कोई व्यक्ति उस नियम का पालन नहीं करता तो उसे समाज से बहिष्कृत कर दिया जाता है। इनके आर्थिक पक्ष का अवलोकन करने पर यह तथ्य सामने आता है कि वर्तमान समय में पहाड़ी कोरवा

समुदाय आज कृषि के साथ साथ अपनी जीविका चलाने के लिए मजदूरी का भी काम करते है , पुरुष के साथ महिलाएं भी मजदूरी का काम करती है। इनके राजनैतिक पक्ष को जानने के बाद यह कहा जा सकता है कि आज भी यहा परंपरागत पंचायत प्रणाली देखने को मिलती है , समाज में नियम तोड़ने पर पंचायत के द्वारा दंड दिया जाता है।

******